(सर्वाधिकार रचतक के स्वाधीन सुरखित हैं)

श्री पञ्चस्तवी

श्लोक तथा कश्मीरी भाषा में अर्थ

रचतक

पं० जीयालाल धर (सराफ), भटयार,
श्रीनगर काश्मीर

प्रकाशक:

महाराज कृष्ण धर-राज़ा प्रसाद कोल

मूल्य—।।।)
Price 75 nP.

(All Rights reserved)

Kashmir Mercantile Press, Srinagar.

प्रार्थना

माज्य भवान्य छम म्य बूड चियानि आश
म्यति भोजतम च जारी
छुस प्रथर प्योमुत तुलुम थुद
कासतम म्य लाचारी ॥ १ ॥
पाद्य सेवन करः उन्य भ च्योन
लगै पादन च्य पारी
ध्यान दारः चोन हृदयस मज्ज
जन भिहित च तिलकधारी ॥ २ ॥
उन्य भ गिवः च्यनि कशिरिस मज्ज
गुण त लचिण सारी
पादनूय च्यानिन भ लागै लोल पोश चारि चारी ॥ ३ ॥
च्यानि दर्शन भापत म्य गोम इचकाल प्रारि प्रारी
हावतम म्य मुख कासतम म्य जन्म
जनमन हूज्ज खारी ॥ ४ ॥
कुर म्य पञ्चस्तवी तरजमः कशिरिस मज्ज जारी
युथ उपकार वाति भक्तिन
म्यति भनि च्यनि थारी ॥ ५ ॥

ॐ नमः त्रिपुर सुन्दर्यै ।

—: लघुस्तवः :—

ऐन्द्र्यश्चव शरासनस्य दधती मध्ये ललाट प्रभां
शैवलीं कान्ति मनुष्या गौरिव शिरस्यासम्बती सर्वतः ।
सा वासौ त्रिपुरा हृदि द्युति रिवोष्णांशोः सदाहः स्थिता
क्षिन्धान्नः सहसा पदे स्तिमिरचं ज्योतिर्मयी वाङ्मयी ॥१॥

اندرازہ سنری کمان ہش دفت منز للاٹس دارانی
چندر مس ہش سفید وون دفتی بشرس پٹھ لیس چمکانی
ہر دیس میں سریہ سندری پاٹھی چمکونی دفتی روزانی
سوی تم پور سندری سانس ہر دیس منز روز تن
سوی جوتی سروپ سرسوتی سروپ بنتھ اسی ٹھیکتن
ترن پدن ہندی اوگرہ کن۔ تری ودھ پاپ سانی ژ ٹلن

या मात्रा त्रपुसीलता तनुलसत्तन्तुस्थितिं स्पर्धिनी
वाग्बीजे प्रथमेस्थिता तव सदा तां मन्महे ते वयम् ।
शक्तिः कुण्डलिनीति विश्वजनन व्यापार बद्धोद्यमा
ज्ञात्वैष्य न पुनः स्पृशन्ति जनने गर्भेऽर्भकत्वं नराः ॥२॥

پوسہ زاوجہ تریلی لنجی ہنری تاری ہش ہتھ چھپیلاو
ساڑھ تری دار زاوج دنتھ اسہ کنڈلنی شکتی چھوٹا نام
ہیزہ اکھر سس منز کلا یوسہ ٹھیکت چھی آسانی
وشوی کلا جگت پیدہ کرنس پٹھ آسونی اود یوگی
امرکوی دھیان ایس منش زانی کرسنا کری سپرش
گربھ بہاوس شری بہاوس ادہ کرنی یہ منش

हृद्वा संभ्रमकारि वस्तु सहसा ह्रे ह्रे इति व्याहृतं,
येनाकूत वशादवीह वरदे बिन्दुं विनाप्याक्षरम् ।

तस्यापि ध्रुवमेव देवि तरसा जाते तवानुग्रहे
वाचः सूक्ति सुधारसद्रव मुचो निर्यान्ति वक्त्राम्बुजात् ॥३॥

ہی دیوی یہ کاہنہ خوفناک چیز چھت جلد جلد — کری ائے ائے بندہ روستی سپدی مطلب تس تی حل
یئی مجراتس تی منتر بنی تس چون انو گرہ — نیری وانی تسندی موکھ لشہ چھٹہ امرتہ کوی سوسرہ

यन्नित्यं तव कामराजमपरं मंत्राक्षरं निष्कलं
तत्सारस्वत मित्यवैति विरलः कश्चिद्दुधश्चेद्भवि।
आख्यानं प्रति पर्व सत्य तपसो यत्कीर्तयन्तो द्विजाः
प्रारम्भे प्रणवास्पदं प्रणयिनां नीत्वोच्चरान्ति स्फुटम् ॥४॥

ہی نتی روپی دیہ منتر چون کامہ راجہ نا وہ آسون — سوی منتر بشکل بنجھ کاہنہ پر تھوی پٹھ چھوزانہ دون
سوی گوسار سوتر یج اکھر ستپ ہی ریشی چھی پران — اوتم پردن پٹھ برہمن ائیوک دیا کھیان چھی کران
واتہ ناوت اوچہ جاے پٹھ یئی منتر اوشچارن کران

यत्साद्यो वचसा प्रवृत्ति करणे दृष्ट प्रभावं बुधैः
तार्तीयीक मृहं नमामि मनसा त्वद्बीज मिन्दु प्रभम्।
अस्त्रीवोऽपि सरस्वती मनुमतो जाड्याम्बु विच्छित्तये
गौः शब्दो गिरि वर्तते स नियतं योगं विना सिद्धिदः ॥५॥

تیری بیج اکھر وک مہاوانی کھلنس پٹھ گاٹل وچھان — تتھ اکھر س چندرہ دتی ستر چھیس من کن برنام کران
سروپ بنجھ سو یوگ دارنائے روستی سدھی دیوان — مورکھ روپی پاپتس گلنہ پاپت وارڈ نانی اگن بنان

एकैकं तव देवि बीजमनघं सव्यञ्जनाऽव्यञ्जनं
कूटस्थं यदिवा पृथक् क्रमगतं यद्वा स्थितं व्युत्क्रमात्।
यं यं काममपेक्ष्य येन विधिना केनापि वा चिन्तितं
तत्तं वा सफलं करोति सहसा तत्तं समस्तं नृणाम् ॥६॥

ہی دیوی ایس پری چون بیج اکھر بد کونتی — دوشہ روہس یادوشہ سوئی اللہ سیوی یا یون یونتی
یی یی کامنائے پاپت ایس منش آسی جہان — تس منشس بوہ سرس منتر سادی مطلب چھی نیران

वामे पुस्तक धारिणी मुभयदा साक्षिस्रजं दक्षिणे
भक्तेभ्यो वरदान पेशल करां कर्पूर कुन्दोज्ज्वलाम् ।
पद्मोल्लासि सरोरुहा पत्र कान्त नयन स्निग्ध प्रभालोकिनीं
ये त्वामम्ब न शीलयन्ति मनसा तेषां कवित्वं कुतः ॥७॥

کھودرس اتھس منز چہ پوستک دارنت ہی بھوانی دچھنی اتھس جپ مال بیریت ابھئے دیوانی
بیا کھ اتھ چون پمپوش زان پھکتن دَرِ دیوانی پھولتہ پمپوشہ ترِ وزن ژہ بھکتن وچھانی
یس یئی دھیان کری چون امبا من تس پرسن بنانی آسہ کاہنہ سو بتھ جگتس منز تس چھی دانا ونانی

ये त्वां पाण्डुर-पुण्डरीक पटल स्पर्द्धाभिराम प्रभाम्
सिञ्चन्तीमुडुराज बिम्बमिव शीतैः शीकरैः शाश्वतैः ।
अभ्रान्तं विकटस्फुटाक्षरपदा निर्यान्ति वक्त्राम्बुजा-
त्तेषां भारति! भारती सुरसरित्कल्लोल लीलोर्मिवत् ॥८॥

یس سفید پمپوش ڈلہ پاٹھ خوش ژہ دتی وچھانی ورشن کران امرت کوئی چھٹہ تمچے ایوانی
یس یئی دھیان کری برہمانڈس منز چھ تس نیرانی بے روک پاٹھ تسندی مکھ نشہ سرسوتی ہنز دانی

ये सिन्दूर पराग पुञ्ज पिहिलां स्वस्तेजसा दाडिमा-
मुर्वी चापि विलीन यावक रस- प्रस्तार मग्नामिव ।
पश्यन्ति क्षणमप्यनन्य मनसा स्तेषा मनङ्ग-ज्वर-
क्लान्तास्त्रस्त-कुरङ्ग-शावक दृशो वश्या भवन्ति स्फुटम् ॥९॥

چانی تیزہ کن یس اکھا دچھی سندری برتھی آکاش پرتھوی لاچھی رنگہ فیٹچ دچھی آسس منس باس
نہ ڈلونی منہ کھنہ ماترس یس یئی دھیان دارانی سارے شکھتی تریہ روپ بتھ تمن چھی قادر ایوانی
تمہ شکھتی یمن کامدیو تیر سیت بند کرانی تتھ پاٹھ بتھ خوجمت مرگ بچہ کاہنہ رزانی

चञ्चत्काञ्चन कुण्डलाङ्गद धरा माबद्ध काञ्चीसजं
ये त्वां चेतसि तद्वते क्षणमपि ध्यायन्ति कृत्वा स्थितिम् ।
तेषां वेश्मसु विभ्रमाद्धरहः स्फारी भवन्त्यश्चिरं
माद्यत्कुञ्जर कर्ण ताल तरलाः स्थैर्यं भजन्ते श्रियः ॥१०॥

چمکتہ سونہ مختہ کنواجی پچھ بند ڑہ لاگانی سونہ بنسر تاگر پرزلہ دن چھک ٹہ کمرس گنڈانی
یس بیٹی دھیان چون بنسر بنسر یکری تھ پاٹھ یس لگانی تس زندی شانہ شوکت گھرس ریٹر تامت لچھی
سوٹھی یوسہ بارھی کنہ کی چرخ پاٹھ پچھل آسانی سارہ سئے سمیدایہ تس پرشس قرار کرتھ چھی روزانی

आमृष्टया शशिखण्ड मण्डित जटा जूटा नृमुण्ड स्रज
बन्धूक प्रसवारुणाम्बर धरा प्रेतासनाध्यासिनीम् ।
त्वां ध्यायन्ति चतुर्भुजां त्रिनयना मापीन तुङ्ग स्तनीं
मध्ये निम्न वलित्रयाङ्कित तनु त्वद्रूप संवित्तये ॥ ११॥

شوبھونی جانی جٹہ ٹوکہ نال منش کلہ مالہ سس بندوقر پوشہ رنگہ مرخ پوشاک تلہ مردہ آسنہ سس
کمرس تاگر گنڈتھ چترز بھج تری نتر دارانی چون سروپ زانہ ہ بایت یئی دھیان بھکتی چھی سرانی

जातोऽप्यल्प परिच्छदे क्षितिभुजां सामान्य मात्रे कुले
निःशेषावनि चक्रवर्ति पदवीं लब्धा प्रतापोन्नतः ।
यद् विद्याधर वृन्द वन्दित पदः श्री वत्सराजोऽभवत्
देवि ! त्वच्चरणाम्बुज प्रणतिजः सोयं प्रसादोदयः ॥१२॥

کانہہ راجا معمولی کلس منز آسہ زامت کل پرتھوی پٹ کران آسہ راج آسن پراومت
تس چکردتس یادن دیوتا چھی پوزانی چھو مہا تس چانی یاد پوزانے منز مہربانی

चण्डि ! त्वच्चरणाम्बुजार्चनविधौ बिल्वीदलोल्लुण्ठन
त्रुट्यत्कण्टक कोटिभिः परिचयं येषां न जग्मुः कराः ।

ते दण्डांकुश चक्र चाप कुलिश श्रीवत्स मत्स्यांकितैः,
शोभन्ते पृथिवी भुजः कथमिवाम्बोज प्रभैः पाणिभिः ॥१३॥

ہی ڑنڈی چانی ڑرن پوزا یہ پٹھ لیس انا نی ، بلکہ پوش ڑرٹ ڑرٹ کنڈی سیت اٹھ لیس چھی ڑھانی
ٹونگ تیر کمانی ہند نشانہ یس کنڈی خشہ سیت وسانی ، تتھ اتھ سس پرش بیہ زمہ راجہ مہاراج بنانی

विप्राः क्षोणिभुजो विशस्तदितरे श्रीराज्य मध्वासवैः,
त्वां देवि! त्रिपुरे! परापरमयीं संतर्प्य पूजाविधौ!
यां यां प्रार्थयते मनः स्थिरधियां तेषां तएव ध्रुवं
तां तां सिद्धि मुवाप्नुवन्ति तरसा विघ्नैरविघ्नी कृता ॥१४॥

برہمن راجہ ویش یا شدر چانی پوزا کرانی ، دودھ گیو یا چھ شراب پوزا ئے کن ژہ ارپن کرانی
نر دھا یہ کن ئی کیتر ھا منگن چھک ضرورتن دیوانی ، بے روک پاٹھ وگنہ رستوئی سدھی سو پراوانی

शब्दानां जननी त्वमत्र भुवने वाग्वादिनीत्युच्यसे
त्वत्तः केशव वासव प्रभृतयोऽप्याविर्भवन्ति स्फुटम्!
लीयन्ते खलु यत्र कल्प विरमे ब्रह्मादय स्तेऽप्यमी
सा त्वं काचिदचिन्त्य रूप महिमा शक्तिः परा गीयसे ॥१५॥

ہی ماتا ترہوئس منتر شبد روپ ژہ آسانی ، جگتس منتر ناد چونوئی سرسوتی چھئی ونانی
ژئی نشہ کیشو اندر اجہ دیوتا پرکٹ بنانی ، کلپ انتس برہما دک ژئی نشہ لے گژھانی
کوستانیہ تہ سرنی مہا سس تہنز شکھتی چھی ونانی

देवानां त्रितयं त्रयी हुतभुजां शक्तित्रयं त्रिस्वरा-
स्त्रय्यो लोक्य त्रिपदी त्रिपुष्कर मथो त्रिब्रह्मवर्णास्त्रयः ।

यत्किञ्चिज्जगति त्रिधा नियमितं वस्तु त्रिवर्गात्मकं
तत्सर्वं त्रिपुरेति नाम भगवत्यम्बेति ते तत्वत: ॥१६

دیون منتر ترلوئے دیوتری اگن منتر تری اگن ژئی شکھتی منتر تری شکھتی ژئی سرن منتر ترلوی سرژئی
ورن منتر تری ورن ژئی گنگا جمنا سرسوتی ژئی لو لوہ سوہ گایتری ژئی ست چت آنند ژئی
بھی کینشراہ قاعدس منتر ترگن سروپ سو سو روپی پتہ پتہ پکان ژئی

लक्ष्मी राजकुले जया रणभवि क्षमङ्करी मङ्कालि
ब्राव्याद द्विप सर्प भाजि शवरी कान्तार दुर्गे गिरौ ।
भूत प्रेत पिशाच जम्बुक भये स्मृत्वा महा भैरवी
व्यामोहे त्रिपुरा तरन्ति विपद: स्तारा च लोय ह्रुवे ॥१७

رازہ گھرن منتر ژہ لچھی۔ جئے ژہ منتر رن بھومی الٹھوتی کلیانہ روپی نوفن کا جانورن منتر شکاری ژئی
کوہن پیٹھ چھک ژہ درگا پشاچن نشہ بھیروی یم الٹھ جاین دھیان چون سرن تن ژہ آبادو رکرانی

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती काली कला मालिनी
मातङ्गी विजया जया भगवती देवि शिवा शाम्भवी ।
शक्ति: शंकर वल्लभा त्रिनयना वाग्वादिनी भैरवी
ह्रींकारी त्रिपुरा परा परमयी माला कुमारी त्र्यसि ॥१८

مایا ژئی کنڈلنی ژئی۔ کریا ژئی۔ مدومتی ژئی کالی ژئی۔ کلا ژئی۔ مالنی ماتنگی ژئی
وجیا ژئی۔ جیا ژئی۔ اختیار وا جینہ ژئی چت سروپ ژئی سامرتھ ژئی شانبھوی شکتی ژئی
شنکر منتر ماٹھ چھک ژئی سرسوتی بھیروی ژئی ہریم شکلم چہ اپر ترپرا۔ ما تا یم روپ ژئی

आई पल्लवितै: परस्परयुतै: द्वित्रि क्रमाद्यक्षरै:
काद्यै: शान्तगतै: स्वरादिमिरथो क्षान्तैश्च लै स्तै: स्वरै:

नामानि त्रिपुरे! भवन्ति खलु यान्यत्यन्त गुह्यानि ते
तेभ्यो भैरवपत्नि विंशति सहस्रेभ्य: परेभ्यो नम: ॥१६॥

ہے پٹھ سارنی اکھر دوئی تری کرمہ ملناوت ہے پٹھ تانیرشیدہ سُس راوت ناوچانی بناوت
ہی تریرائی دُھ ساس ناوچانی رھسہ روپ بنانی ہی بھیرو پتنی تن برھسہ ناون پرنام کرانی

बोद्धव्या निपुणं बुधै: स्तुतिरियं कृत्वा मनस्तद्गत
भारत्या त्रिपुरे त्यनन्य मनसा यत्राद्यवृत्ते स्फुटम् ।
एक द्वि त्रिपद क्रमेण कथित स्त्वत्यादं संख्याक्षरै:
मन्त्रोद्धार बिधि विशेष सहित: सत्सम्प्रदायान्वित: ॥२०॥

جانتی چھوی گاٹلن یئی تو چئی کُن من لگاوت
چانن پادن ہندی شمار کیو اکھر و کن ملناوت
گوڈنیکہ دوئی تریمی پد کرمہ منتر وو ہار ودھ بناوت
رتی سمپرداے سُس یئی تو اُن مرثی کُن من ٹھیکراوت

सावद्यं निरवद्य मस्तु यदि वा किं वानया चिन्तया
नूनं स्तोत्रमिदं पठिष्यति नरो यस्यास्ति भक्तिस्त्वयि ।
सचिन्त्यापि लघुत्व मात्मनि दृढं संजायमान हठात्
त्वद्भक्त्या मुखरी कृतेन रचितं यस्मान्मयापि ध्रुवम् ॥२१॥

ہندی سُس یا ہندائی رُس فکرا اج تراوتھ
یس یئی تو تر کاہہ منش پری آسس بھکتی چانی
پنتر یا نس لوپ ہو زانت رتی در رُھتا پرادم
چانی بھکتی ہندی زورہ بکواسی بنتھ یئی تو تا بنادم

चर्चा स्तवः

ॐ नमः त्रिपुर सुन्दर्यै

आनन्द सुन्दर पुरन्दर मुक्त मौल्यं
मौलौ हवेन निहितं महिषासुरस्य ।
पादाम्बुजं भवतु मे विजयाय नम्रसु-
मन्जीर शिन्जित मनोहर नुम्बिकायाः ॥ १ ॥

پادچانی سُندر آنند دایک اِندراجن تراویتھ مُختہ مال
یمہ سیت زیر دیجیت مہشاسُرئی کھنہ باترس منرووت سوپاتال
سُوئی رُونیہ پاد چون روزتن مہ ہر دیس
یُتھ بہ امبکائی بوزہ شرونیہ شرونیہ تال
سوی منوہر پادنتن مہ ہیتو جے کارک مہ ہاوتن کمال

सौन्दर्य विभ्रम भुवो भुवनाधिपत्य-
संपत्ति कल्प-तरवस्त्रिपुरे ! जयन्ति ।
एते कवित्व कुमुद प्रकराव बोध-
पूर्णेन्दव स्त्वयि जगज्जननि ! प्रणामाः ॥ २ ॥

یم پرنام سُندر ریکہ وِلاسک جائے بنتھ تہندی شمار کرنہ ایوان
ترن بونن ہندی راج سمپدایہ ہندی کلپہ ورکھ ہی یم پرنام چھئی بنان
یم پرنام کوتائی رُوپی کمدہ پوشہ پھولراوند باپت چندرمہ چھئی بنان
ہی جگت زننی وانئے ژہ میانی یتھ ہی پرنام چیس بہ ژئی کُن کران

देवि ! स्तुतौ व्यतिकरे कृत बुद्धयस्ते
वाचस्पतिं प्रभृतयोऽपि जडी भवन्ति ।
तस्मा न्निसर्ग जाड़िमा कतमोह मत्र
स्तोत्रं तव त्रिपुर शासनि पत्नि ! कर्तुम् ॥ ३ ॥

چانی توتا کرس پٹھ چھونہ سامرتھ برہسپت تہ دیوتا جڈ بنانی !
ہی ترن تاپن گالیہ چھس مورکھ بہ آسنھ کتہ سامرتھ بہ کرہ توتا چانی

मातः ! तथापि भवतीं भवतीव्रताप
विच्छित्तये स्तुति महार्णव कर्णधारः ।
स्तोतुं भवानि ! स भवच्चरणारविन्द -
भक्तिग्रहः किमपि मां मुखरी करोति ॥ ४॥

ہی ماتا زانت ہیی سمارہ کٹھن دُوکھ چٹنہ بابت کردم توتا ہیی چانی
ہیہئے توتا یتھ سمسار ساگرس بنی میسانی ناویہ ہانج میانی
چانی پاد کملہ کے لوچہ آوشہ بکواسی ہیہو چھس توتا کرانی

सूते जगन्ति भवती भवती बिभर्ति
जागर्ति तत्क्षयकृते भवती भवानि ।
मोहं भिनत्ति भवती भवती रुणद्धि
लीलायितं जयति चित्रमिदं भवत्याः ॥ ५॥

برہمارو پہ جگتس کران پیدہ ژی ویشنو رُوپہ پالن کران ژی
رودرہ رو پہ سمہار آخرس کران ژی مُوہ دیوان تہ بیہ تتھ تی گالان ژی
لیلائے یمہ چانی چھوس وچھان رنگہ رنگہ جے جے کار آسنئے چانن لیلا ینئی

यस्मिन्मनागपि नवाम्बुजपत्र गौरि !
गौरि ! प्रसादमधुरा दृशमादधासि ।
तस्मिन्निरन्तर मनङ्ग-शराव कीर्णः -

सीमन्तिनी नयन सन्ततय: पतन्ति ॥ ६ ॥

ہی گوری پیوشہ رنگہ صفایس امرتہ نظر چھک ژہ ترا وانی
تس پٹھ نتئی نیم سارئی یو گنئی کامدیوس زن چھ وش گژھانی

पृथ्वीभुजो, प्युदयन प्रवरस्य तस्य
विद्याधर प्रणति चुम्बित पाद पीठ: ।
यच्चक्रवर्ति पदवी प्रणय: स षष
त्वत्पाद पङ्कज रज: कणज: प्रसाद: ॥ ७ ॥

اودین راجس کھراوی پیٹھ کران میٹھ ودیادرتہ دیوتس چھی آدین
چکرورتی عہدہ اوس تم پراومٹ چانی پادگردی ہندی انوگرہ کن

त्वत्पाद पङ्कज रज: प्रणिपात पूतै:
पुण्यै रनल्प मतिभि: कृतिभि: कवीन्द्रै: ।
क्षीर क्षपाकर दुकूल हिमाम्बु दाता
कैरप्यवापि भुवन त्रितयेऽपि कीर्ति: ॥ ८ ॥

ہی دیوی چانن پیوشہ پادن ہنزی گردی پٹھ کریمو پرنام
تم بنئے نرمل اوتم تیز بوز بس دانا اوتم کوی پراومو نام
دودھ چندرمہ ریشم دستر بیہ شینہ پاٹھ صفا بنتھ ترن بونن منز بنئے نیکنام

कल्पद्रुम प्रसव कल्पित चित्र पूजा -
मुद्दीपित प्रियतमा मद रक्त गोतिम् ।

नित्यं भवानि ! भवती मुषवीणयन्ति
विद्याधराः कनकशैल गुहागृहेषु ॥ ९ ॥

کلپبرکھ پوشو سیت چانی یوجا لولہ سیت چھ گیوان چانی گیت
نت سمیر کے گفا روپی گھرن منز وایان دریا دھر سوز تہ ساز گیت

लक्ष्मी वशी करण कर्मणि कामिनीना -
माकर्षण व्यतिकरेषु च सिद्धमन्त्राः ।
नीरन्ध्र मोह तिमिर च्छिदुर प्रदीपो
देवि ! त्वदंघ्रि जनितो जयति प्रसादः ॥ १० ॥

چانی چرہ کملہ سیوائے ہند پرساد وش کران لچھمی تہ بیہ سدھین
شکھتی سو پراوان موہ روپی گینہ انیہ گٹہ گالان ژانگی سیت زان

देवि ! त्वदंघ्रि नख रत्न भुवो मयूखाः
प्रत्यग्र मौक्तिक रुचो मुदमुद्वहन्ति ।
सेवानति व्यतिकरे सुर सुन्दरीणां -
सीमन्त सीम्नि कुसुम स्तव कायितं यैः ॥ ११

ہاج بوانی چانی ژرتن ہند نمہ رتن تختہ دفتی داران زن کران
یوگنئی یلہ پران پیوان ژہ ژرتن پٹھ نمہ چمکہ پرزالان مس تہ سمہ تمن

मूर्ध्नि स्फुरच्चुहिन दीधिति - दीप्ति दीप्त
मध्ये ललाट मुमरायुध रश्मि चित्रम् ।

हृच्चक्रं चुम्बि हृत्पद्मकोश कर्णिकानुरूपं
ज्योति र्यदेत दिदमम्ब! तव स्वरूपम् ॥ १२ ॥

ماتا رہ مستک چندر زن پرزلوں رام رام بدرنیہ دونی چکوں ن
ہردیس منراگنی جیوتی سروپ زن مارچ چون سروپ چھوی پرکاش آسوں ن

सिन्दूर पांसु पटलच्छुरितामिव द्यौ
त्वत्तेजसा जतुरसस्नपिता मिवोर्वीम् ।
यः पश्यति क्षणमपि त्रिपुरे विहाय
व्रीडां मुडानि सुदृशस्तमनु द्रवन्ति ॥ १३ ॥

سندری گردی سستی جرمت آکاش لاچھ رنگہ پرتھوی شران کرتھ زن
یس وچھی کھنہ ماترس لاج تراوت تس سدھی مارچ بوانی پتہ دوزن

मातः! मुहूर्तमपि यः स्मरति स्वरूपं
लाक्षारसं जसरतन्तु निभं भवत्याः ।
ध्यायन्त्यनन्य मनसस्तमनङ्गतप्ता:
प्रद्युम्न सीम्नि सुभगत्व गुणं तरुण्यः ॥ १४ ॥

ہی ماتا یس مہورتس دھیان کری چون سروپ لاچھی رنگہ تار سمان
سندر جوان اچھر رچھہ نہ ڈلونی ہنہ سہسہ کامنائی تاد مچہ تس چھی سمران

आधार मारुत निरोध वशेन येषां
सिन्दूर रञ्जित सरोज गुणानुकारि ।
दीप्तं हृदि स्फुरति देवि! तवत्स्वतीयं

ध्यायन्ति तानिह समीहित सिद्ध साध्याः ॥ १५॥

مولا دارک پران بند کرتھ یمن سندری بیت رنگمت پموش زن
ہر دیس منز اتھ پموشس پٹھ چون سروپ باسان رات کہو دن
تمنی پرشن ہند چھی دھیان داران سدھ سادھ دیوتا تہ بیہ ست جن

ये चिन्तयन्त्यरुण मण्डल मध्यवर्ति
रूपं तवाम्ब! नव यावक पङ्क विङ्गम् ।
तेषां सदैव कुसुमायुध बाण भिन्न-
वक्षः स्थला सुगदृशो वशगा भवन्ति ॥ १६॥

سر یہ منڈلکر پرکاشہ وُوزلی رنگہ سُس بیہ لاچھی رنگہ سُس یم چون دھیان داران
کامدیو سندی تیرہ چچہ وچھ سہ اچھ رچھ تمن ماتحت چھی روزان

रूपं तव स्फुरित चन्द्र मरीचि गौर-
मालोकते मनसि वागधिदैवतं यः ।
निस्सीम सूक्ति रचनामृत निर्भरस्य
तस्य प्रसाद मधुराः प्रसरन्ति वाचः ॥ १७॥

یم پُرش منس منز چندر مہ باٹھ چمکون سرسوتی رُوپہ چون دھیان داران
حد روس دانی مدر امرت بھر تھئی نیری تمن نرمل پرواہ ہیو زن

शर्वाणि! सर्व जन वन्दित-पादपद्मे!
पद्मा च्छद च्छवि विडम्बित नेत्र-लक्ष्मि!

निष्पाय मूर्ति जन मानस राजहंसि।
हंसि त्वमापदमडनेकविधां जनस्य ॥ १८

ی پاپ گالونی ژیٔ پاد کملن ساری جیو چھی پرنام کرانی
پیو شبہ برگہ کے دفتی ہند پاٹھ چانی نتر کمل چھی شو بھانی
ندھ مہشس چھک چت ساگرس منز راجہ ہنس ہیش زن ژہ روزانی
ٔی چھک سادھکس نانا پرکارک دوکھ تہ وادِ آپدا دور کرانی

इच्छानुरूप मनुरूप गुण - प्रकर्शं
सङ्कर्षणि। त्वमनुसृत्य यदा बिभर्षि ।
जायेत स त्रिभुवनैक गुरु- स्तदानीं
देव: शिवोपि भुवन त्रय सूत्रधार: ॥ १९

ی شنکر شتی پنتے ژھائے ..لی چھک ترگن سروپ پانہ داران
ہی دیوی ترن لونن ہند کیول گورو شیو ناتھ چھو اپدان
ہ سوی شمبھو ترن بھونن ہند نمود پاٹھ سوتر دارہ بنان

योयं चकास्ति गगनार्णव रत्न मिन्दु -
र्योयं सुरासुर गुरु: पुरुष: पुराण: ।
यद्वाम मूर्ध्नि मिद मुद्धक - सूदनस्य -
देवि! त्वमेव तदिति प्रतियादयन्ति ॥

کاشہ سدرس منز رتنن یوسہ شو بھا ژندر مس چھئے انانی
ون تہ اسران لیس گورو چھ آسونیہ بھگوانس شکھتی دیوانی
سہ مہادیو سنز چھ اردانگی سوی چھک ژی یئی چھو ماج سدھ بنانی

ध्यातासि हैमवति येन हिमांशु रश्मि -
माला ऽमलद्युति-रुकल्मष मानसेन ।
तस्या ऽविलम्बम ऽनवद्य मनल्प कल्प -
म ऽल्यैर्दिनै : सृजसि सुन्दरि! वाग्विलासम् ॥ २१॥

یُس سُری چون دھیان نرمل کرنو سُس چندرمس سمان اندرہ شدھ منہ کن
ہی سندری تس ژہ جھٹ پٹ کران پیدہ سرسوتی ہُند وِکاس انو گرہ کن

त्वां व्यामिनीति सुमना इति कुण्डलीति
त्वां कामिनीति कमलेति कलावतीति ।
त्वां मालिनीति ललिते त्य ऽपराजितेति
देवि! स्तुवन्ति बिजयेति जयेत्युमेति ॥ २२॥

سارسی واتِت ژہ کامنا دایک لچمی - کلا - بیہ مالا روپ
دشمن پٹھ جئے سُس ژی للتا چھی وَنان ژی بجیا ژی اوما روپ

उद्दाम काम परमार्थ सरोज षण्ड-
चण्ड द्युति द्युति मुपासित षट् प्रकाराम् ।
मोह द्विपेन्द्र कदनोद्यत बोध सिंह-
लीलागुहां भगवतीं त्रिपुरां नमामि ॥ २३॥

یُسہ کامراج بیجاکھر پمپوش ڈلہ کے پھولنہ بایت سریہ روپ روزانی
مولا دار پٹھ شٹھ چکرس منز اوپاسی رُوپ یُسہ تتی آسانی
یوسہ موہ ہستس گالنہ بایت گیانہ روپ سہہ گفی چھی روزانی
تمسی بھگوتی ماتا ترپرائی کُن گُل گنڈھ تس چھُس پرنام کرانی

गणेश वटुक स्तुता रतिसहाय कामान्विता
स्मरारिवर विष्टरा कुसुमबाण बाणैर्युता ।
अनङ्ग कुसुमादिभि: परिवृता च सिद्धैस्त्रिभि:
कदम्बवन मध्यगा त्रिपुरसुन्दरी पातु न: ॥ २४॥

گنیش تہ بھیروں چھے توتا ژہ کرتج رتی سان کامدیو چہ سیوا کروں
شونا تھ پانہ چھوی آسن چو منئی کامدیو پوشہ بانن سو دارو ں
اننگہ کوسمو بیہ ترسیو سدھو چہ وتج کدمبہ جنگلس منز چہ روزانی
سوی روپ چون مانج ہی ترپورسندری کلیان مہ کرتنم تہ راچھ میانی

त्वामिन्दवीनिव कला मनु भाल देश -
मुद्वासिताम्बर तलामऽवलोकयन्त: ।
सद्यो भवानि! सुधिय; कवयो भवन्ति
त्वां भावनाहित धियां कुल कामधेनु: ॥ २५॥

یم مستکس منز ژہ چندرمہ کلاہش وچھی چمکا دمتی آکاشہ سُس
ہی دیوی جلدئی چھئی تم بنان دانا بیہ بڈی کوتائی رسس
چھک تمن دیوان چئی سارئی مطلبن چانی بادنائے کن تم نرمل بوزسُس

उत्तप्त हेम रुचिरे त्रिपुरे! मुनीहि
चेत श्चिरन्तन मुदीर्घ वनं लुनीहि ।
कारागृहे निगड़ बन्धन पीड़ितस्य
त्वत्संस्मृतौ झड़िति मे निगड़ा स्त्रुटयन्ति ॥ २६

تاومت سون زن ژہ چمکان ترپرائی شدھ کرمن مہ پاپہ کھلہ میانی لون

سمار روپی جیلس منز چھوس یہ کامنائی بیڑین ہند چھوم مہ بور
چانی سمرنی کن جلد جلد چھنن مہ بیڑی یلہ آسی عارتس مہ انوگرہ چون

रुद्राणि! विद्रुम मयीं प्रतिमा मिव त्वां
ये चिन्तयन्त्यरुणकान्ति मनन्य रूपाम्।
तानेत्य पङ्कज दृशः प्रसमं भजन्ते
कण्ठावसक्त मृदु बाहु लता स्तरुण्यः ॥२७॥

ہی رودرانی یُس چانس سُروپس وچھی رودر شکلہ سریسندی پاٹھ چمکان
اپُورو روپس تھیسئی دھیان کری سُندر نظر وسیہ اچھ رچھ جوان
زورہ سیت تمہ گردنی پٹھ اتھ تراوی تراوی اندانی روز تھ تس سیوا کران

त्वद्रूप मुल्लसित दाडिम पुष्परक्त -
मुद्भावये न्मदन दैवत मुक्षरं यः।
तं रूपहीन मपि मन्मथ निर्विशेष -
मालोकयन्त्यरु निलम्बभरा स्तरुण्यः ॥२८॥

یُس چون دھیان کری دین پوشہ رنگہ سُس اونا شہ کامراج بیجہ اکھر س
یُدوئی روپ کن آسی سوی بد شکل اچھ رچھ وچھن زن کامدیوتس

त्वद्रूपैक निरूपण प्रणयिता बन्धो दृशो स्त्वद्गुण -
ग्रामाकर्णन रागिता श्रवणयो स्त्वत्संस्मृति श्चेतसि।
त्वत्पादार्चन चातुरी करयुगे त्वत्कीर्तनं वाचि मे
कुत्रापि त्वदुपासन व्यसनिता मे देवि मा शाम्यतु ॥२९

ہی دیوی چانہ درشنک ابلاش ہردمہ نترنی منز مہ روز تن

چانی گن بوزنک تمنا مہ آستن ہر دمہ روز تن میانن کنن
چون نامہ سمرن ژتس منز گری گری چانی یاد پوجا میانن اتھن
چون کیرتن کردنی روز تن مہ وانی اوپاسنا چانی کم متہ مہ گزھتن

ब्रह्मेन्द्र रुद्र हरि चन्द्र सहस्र राशि –
स्कन्द द्विषानन हुताशन वन्दितायै ।
वागीश्वरि! त्रिभुवनेश्वरि! विश्वमात-
र्दन्त बेहि श्च कृत संस्थितये नमस्ते ॥ 30 ॥

سرسوتی ترپور سندری جگت ماتا بھونی شوری چھک آسوینہ ژئی
برہما رودر اندر سریہ چندر مہ کمار وشنو گنیش چھوئی پوجان ژئی
اندرہ نبرہ واتت ژہ ترھونس سارسئی گل گنڈت میون پرنام وانی نے ژئی

यः स्तोत्र मेतदनु वासर मीश्वराया:
श्रेयस्करं पठति वा यदि वा शृणोति ।
तस्येप्सितं फलति राजमि रीड्यते सौ
जायेत स प्रियतमो हरिणेक्षणानाम् ॥ 31 ॥

یُس ئی چون تو تر پری پرتھ دوہ لولہ سان یا کنو بوزی اَدہ بنیہ تس کلیان
چکر ورت راجہ تس کرن پوجا ساری مطلب تس چھی نیران
منج کامنا سدھ تس چھی سیدان سوئی چھو یو گنین ہند زیادہ ٹوٹھ بنان

अथ घटस्तवः ॥

ओं नमो महामायायै

देवि! त्र्यम्बक पत्नि पार्वति सति त्रैलोक्य मातः शिवे!
शर्वाणि त्रिपुरे मृडानि वरदे रुद्राणि कात्यायनि!
भीमे भैरवि चण्डि शर्वरि कले कालञ्जये शूलिनि!
त्वत्पाद प्रणतान्नन्य मनसः पर्याकुला न्याहि नः ॥१॥

ہی دیوی چھک ژہ ترمبکہ پتنی ژی دنان ستی ژی پاروتی
ترلوکی ہنسر ماتا بھگوتی ژی دیوان ژی چھک مڑانی
ژی ترپورسندری ژی رودرانی ژی بھیانک روپ ژی شروری
ژی چنڈی ژی ترشول دارانی ژی کلی کالس ناش کرانی
آئے شرن ژہ پادن وئے کن چھی نمتھی ویا کلتاے منزاسہ رچھ ژی

उन्मत्ता इव सग्रहा इव विषव्यासक्त मूर्च्छा इव ;
प्राप्त प्रौढ़मदा इवाति विरहग्रस्ता इवार्ता इव ।
ये ध्यायन्ति हि शैलराज तनयां धन्या स्त एकाग्रत-
स्त्यक्तोपाधि विबुद्ध राग मनसो ध्यायन्ति वामभ्रुवः ॥२॥

مچراہ تہ براہ سس زہر کن موچھت نشہ رس درہن چھٹمت چانی عار چرہ سس
ہی ہمالہ پتری یم کرن چون دھیان تم آسونی چھی سٹھاہ بھاگوان
اچھ رچھ ایکاگر بنتھ اوپادھی رچھ راگہ سہ تسندوی دھیان چھی داران

देवि! त्वां सकृदेव यः प्रणमति क्षोणीभृत स्तं नम-
न्त्याज्ञन्मस्फुरदङ्घ्रि पीठ विलुठत्कोटीर कोठि च्छटाः।
यस्त्वामर्चति सोच्यते सुरगणैः यः स्तौति स स्तूयते
यस्त्वां ध्यायति तं स्मरार्तिं विधुरा ध्यायन्ति सिद्धाङ्गनाः ॥३

بس پرش اکلٹہ کری ژہ کن پرنام — تسنزی کھراوی پٹھ رازہ موکٹہ ڈلوان
بس پرش لولکن کری چانی پوٗجا — تس پرشس پوٗزان دیوہ کھل
بس پرش کران آسی چانی توٗتا — دیوتا تسنزی استوتی کران
بس پرش من کن کری چونئی دھیان — سرگچھ اچھ رچھ تس چھی سمران

ध्यायन्ति ये क्षणमपि त्रिपुरे! हृदि त्वां
लावण्य यौवन धनैरपि विप्रयुक्ताः।
ते विस्फुरन्ति ललिताऽयत लोचनानां
चित्रैक भित्ति लिखित प्रतिमाः पुमांसः ॥ ४॥

ہی ترپور سندری بس کری دھیان چون — منز منس کسئی کھنہ ماترس
پیٹھ سوٗ آسہ سندر تائی روس — بیہ جوانی روس بیہ نر دھن
اشٹ سدھئی تس منجے لبہ پیٹھ — شکلہ کھنن سوی دھیان سروان

एतं किं नु दृशा पिबाम्युत विशाम्यस्याङ्ग मङ्गैर्निजैः
किं वाऽमुं निगलाम्यनेन सहसा किं वैकतामाश्रये।
जल्पेत्थं विवशो विकल्प घटना क्लेशेन योषिज्जनः
किं तद्यन्न करोति देवि! हृदये यस्य त्वमाऽवर्तसे ॥५॥

اتھس پوٗرشس کرہ پرویش نظری بیت — اچھ ہا سندن استھانن

کیاسنا نگلھ گڑہ نامس سیت کوئی کن پانس سیت رکھن
اچھر چھ سندر گری گری تس کن بے روک پاٹھ آدین سپدن
سنارس منز کیا چھو دربھ تس ہر دیس منز بس ژہ پانہ فیرن

विश्व व्यापिनि! यद्वदीश्वर इति स्थाणावनन्याश्रयः
शब्दः शक्तिरिति त्रिलोकजननि! त्वय्येव तथ्यस्थितिः।
इत्थं सत्यपि शङ्कुवन्ति यदिमाः क्षुद्रा रुजो बाधितुं
त्वद्भक्तानपि न क्षिणोषि च रुषा तद्वेवि चित्रं महत्॥

ہی جگت دیانی پھ شیو ناتھس ایشرہ ناو جگتس منز ونان
تتھے پاٹھ ماج بھوانی ژی جگتس منز شکتی ہند ناو چھوی ژہ شوبان
یدوے ایشر بھکتن سمسارس منز کونی کونی دوکھ چھو دیوان
آسچر چھ ماج چون کرو دھس پٹھ نی چھکنہ پنن بھکتن دوکھ ژہ ہاوان

इन्दो मध्यगतां मृगाङ्कसदृशच्छायां मनोहारिणीं
पाण्डुत्पल सरोरुहासनगतां स्निग्ध प्रदीप्तच्छविम्।
वर्षन्तीं प्रमृतं भवानि! भवतीं ध्यायन्ति ये दाहिन-
स्ते निर्मुक्त रुजो भवन्ति विपदः त्राजन्ति तान्दूरतः

چندر مس شش صفا چندرمہ گہ سس پھولتس پیوشس پٹھ ژی
خوش ایونہ پرکاشہ گہ سس ژہ آسوینہ یوسہ کران درشن امرت کوی
یم یی دھیان کرن تم بیماری روس روزان آپدا چھی تمنی دور سپدان

पूर्णेन्दो; शकलै रिवाति बहुलैः पीयूष पूरैरिव
क्षीराब्धेः लहरी भरै रिव सुधा पङ्कस्य पिण्डै रिव।

आलेयै रिव निर्मितं तव वपु ध्यायन्ति ये श्रद्धया
चितान्त र्निहितार्ति ताप विपद स्ते सपदं बिभ्रति ॥ ८ ॥

پونم چندرمہ زن امرت پراواہ زن — گچھ پنڈہ کھیرہ سُدیچ لہر زن
شیتس ہیو صفا چون سروپ بناوت — یس کری دھیان تنہ منہ لوکہ کن
تس چھی دُرگ ڈھان دوکھ ہار چرتہ آپدا — سمپدا سو پراوان جنم جنمن

ये संस्मरन्ति तरलां सहसोल्लसन्तीं
त्वां ग्रंथि पञ्चक मिदं तरुणार्क शोणाम् ।
रागार्णवे बहुल रागिणि मज्जयन्तीं
कृत्स्नं जगद् दधति चेतसि तान्मृगाक्ष्यः ॥ ९ ॥

یس سادھک کری دھیان چون باسون — چنمل پرکاشہ سُس بجلی سمان
پانچھ دل ڈنھی بالہ سر یہ سندری پاٹھ — اُوزلہ رنگہ سُستی ژن ژہ چمکان
رنگ سُدرس منز فوٹُت ساروئی — جگت زن رنگہ کن سُرخی سان
یس نی دھیان کری تس یوگنی چھتس منز — تسندوی گری گری دھیان چھی دھاران

लाक्षारस स्नपित पङ्कज तन्तु तन्वी-
मुन्तः स्मरत्यनु दिनं भवतीं भवानि ।
यस्तं स्मर प्रतिमम प्रतिम स्वरूपा
नेत्रोत्पलै र्मृगदृशो भृशमर्चयन्ति ॥ १० ॥

لاچھی سیت رنگتہ پیوشہ تار ھیو — پرتھ دوہہ یس داری چونئی دھیان
تس کامہ دیو زانت کہ یوگنئی — نتر رُوپہ پوشو چھی پوجا کران

सुमस्त्वां वाच्यमृग्यर्क्का हिम कुन्देन्दु रोचिषम्
कदम्ब मालां बिभ्राणा मास्स पाद तल लम्बिनीम् ॥ ११ ॥

ژونا کران چھی اسی ژہ ہی واکھ دیوی — چندرس کوندہ پوشس مش یوسہ چھی دفتمان
شوبھونی کدمبہ چھک ماجی ژہ داروئی — نال چھے ژہ شیرہ پٹھ پادن تان

मूर्ध्नीन्दो: सितपङ्कजासनगतां प्रालेयपाण्डु स्त्विषं
वर्षन्तीं सुमृतं सरोरुह भुवो वक्त्रेपि रन्ध्रेपि च।
अच्छिन्ना च मनोहरा च ललिता चाति प्रसन्नापि च
त्वामेव स्मरतां स्मरारि दयिते! वाक्सर्वतो वल्गति॥

کلس پٹھ چندرمہ شوبونن ژہ درائت — پھوشس پٹھ ژہ دفتی سبس
بہتھ چھک ژہ شوبونی برہمندرس منز — امرت چھٹان بڑی شوبھاے سبس
یس یئ دھیان کری چون ہی دیوی تس — سرسوتی نیرہ مکھ بڑی وکاسہ سبس

ददातीष्टा न्भोगान् क्षपयति रिपून् हन्ति विपदो-
दहत्व्याधीन् व्याधीन् शमयति सुखानि प्रतनुते।
हठादन्तर्दुःख दलयति पिनष्टीषु - विरहं
सकृद् ध्याता देवी किमिव निरवद्यं न कुरुते ॥१३

مطلب چھک دیوان دشمنن ژہ گالان — آپدین چھک ژہ ناش کران
آدین جالان وپادین شمراوان — سکھ تہ سمپدا چھک ژہ ویستاران
اندرم دوکھ تہ داد پریہ ورھ چہ گالان — یم اکی لٹی ماجی دھیان چون کران
تم ادھکہ نہ پاپہ نشہ چھی موکلان

यस्त्वां ध्यायति वेत्ति विन्दति जपत्यालोकते चिन्त

त्यनुचेति प्रतिपद्यते कलयति स्तौत्याश्रयत्युच्चैति ।
अश्च त्र्यम्बकवल्लभे तव गुणानाकर्णयत्यादरा -
त्तस्य श्रीर्न गृहाद्पैति विजयस्तस्याग्रतो धावति ॥१४॥

بس چون کری سمرن بوزسیت بس زانی دویائے کن ماجی بس ژه پرادی
شدهه منه کن جپه ناد چون گری گری لوله نترو سیت کری درشن
شروعه کن فن کن بس وچاری هر وقته تو تائی کری چانی بیه پوجا
گن گیوی چانی لوله سان دن ته رات تمه روستوی بس نه روزی اکهه ساعت
لچی چهنه لشندی گهری نشه نیران جئے تس پر تهه وقته برونهه چهو دوران

किं किं दुःखं दनुजदलिनि! क्षीयते न स्मृतायां
का का कीर्तिः कुलकमलिनि! व्याप्यते न स्तुतायाम् ।
का का सिद्धिः सुरवरनुते! प्राप्यते नार्चितायां
कं कं योगं त्वयि न चिनुते चित्तमूलाम्बितायाम् ॥१५॥

کمنا دوکهه چهی تم هی راکهسن گالونی یم گلنی نه چانے سمرنی سیت
کوسه چهی نیکنامی هی گلس کهارونی یوسه نه بنی چانے توتائے سیت
کوسه کوسه چهی سدهی هی سدهی داتری یوسه نه پراوت سیدی چانی پوجائے سیت
کم کم چهی تم لوگ هی جگت امبا یم نه سدهه بنن چانی چنتن سیت

ये देवि! दुर्धरकृतान्त मुखान्तरस्थाः
ये कालि! कालघनपाश नितान्त बद्धाः ।
ये चण्डि! चण्डगुरु कल्मष सिन्धु मग्ना -
स्तान्पासि मोचयसि तारयसि स्मृतैव ॥१६॥

ہی دیوی یم مہاکالہ سندسی کٹھنس موکھس منز باگ گیمت
ہی کالی یم مہاکالہ سنتری موچی زری چرپاٹھ چھی گنڈ نہ آمت
ہی چنڈی یم باریک تہ کٹھنس پایہ کس سمندرس منز چھ غمت
یلہ کرن دھیان چون تلہ چھک رچھان تمن موکلاوان بیہ تاران چھئی

लक्ष्मी वशीकरण चूर्ण सहोदराणि
त्वत्पाद पङ्कज रजांसि चिरं जयन्ति।
यानि प्रणाम मिलितानि नृणां ललाटे
लुम्पन्ति दैव लिखितानि दुरक्षराणि ॥ १७ ॥

موج بوانی لچھی وشں کرنس پٹھ پادچہ گرد چانی چھی طاقتہ سس
چانی پرنامہ وزی لگہ یمن للاٹس پادچہ گرد چانی بڑی نشانہ سس
سوئی پادچ گرد گالی ذراکھہرتس جگتس منز بنی سوجے کارسس

रे मूढाः किमयं वृथैव तपसा कायः परिक्लिश्यते
यज्ञैर्वा बहुदक्षिणैः किमितरे रिक्ती क्रियन्ते गृहाः।
भक्तिश्चेद्विनाशिनी भगवती पादद्वयी सेव्यता-
मुन्निद्राम्बुरुहातपत्र सुभगा लक्ष्मी पुरो धावति ॥ १८

ہی موڑھ کیازی چھک لے فائدہ تپ کرن پنس شریرس تکلیف دیوان
یگنہ کرن دان کن بڑی دکھنای رکن کیازہ چھک گرہ پنن خالی کران
گڑھ شرن ماجہ شارکائی پراوچہ بھکتی ہہ کرون تسندوی پادسیون
ادہ پھولتہ پمپوشہ نترو سس لچھی چہ برونٹھ برونٹھ ہیئی دورن

याचे न कंचन न कंचन वञ्चयामि
सेवे न कंचन निरस्तसमस्त दैन्य: ।
श्लक्ष्णं वसे मधुर मुद्रि भजे वरस्त्री
देवि! हृदि स्फुरति मे कुलकामधेनु: ॥१९॥

کانسی منگہ نہ ہیہ کینسی تارہ نہ بازی عار چرہ تراوہ کرنہ کینسی سیوا
زاول وستر دارہ کھمہ مودری چیز اچھہ رچھہ نئی سیت کرہ کھیلا
یلہ ماج بوانی ہر دیس منز مرہ روزک تلہ میانی کامنائے سدھ سپدن

शब्दब्रह्ममयि! स्वच्छे! देवि! त्रिपुर सुन्दरि! ।
यथाशक्ति जपं पूजां गृहाण परमेश्वरि! ॥२०

ہی شبد روپی نرمل سروپی ہی دیوی ہی ترپور سندری
کریتھا شکھتی مہ چانی پوجا کر سویکار ہی پرمیشوری

नन्दन्तु साधका: सर्वे विनश्यन्तु विदूषका:
अवस्था शाम्भवी मेऽस्तु प्रसन्नोऽस्तु गुरु: सदा ॥ २१

روزتن سکھی ماج سادھک ساری یم دوشٹھ آسن تم گلتن
شوروپ اوستھا متہ ماج بنتن گورہ دیو سدا مہ پٹھ پرسن روزتن

दर्शनात्पाप शमनी जपान्मृत्यु विनाशिनी ।
पूजिता दुःख दौर्भाग्यहरा त्रिपुर सुन्दरी ॥ २२॥

چانی درشنہ پاپ ساری چھی گلان چانی جپہ مرتو چھوناش سپدان
پوجے کن چون مہما گیونہ کن چھوس دوکھ دُربا گیہ دور چھس گڑھان

नमामि यामिनीनाथ लेखालङ्कृत-कुन्तलाम् ।
भवानीं भव सन्ताप निर्वापण-सुधा-नदीम् ॥ २३ ॥

نمسکار چھوس کران ہمیں کیشس منز چہ چندرمہ پرزلان راترو دن
سمار دوکھن چھک نواران ژئی امرت ندی ھندی پرواہ سیت زن

मंत्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्गतम् ।
त्वया तत्क्षम्यतां देवि! कृपया परमेश्वरि ॥ २४ ॥

منزہین آست کریاہین آست ودھی ہین آست ئی گنجاہ پرودوم
تتھ سارسئی ہی پرمیشوری ژئی کرپاسے کن عارتس مہ ماج بخشم

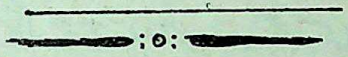

अथ अम्बस्तव : ॥

ओं नमो जगदम्बिकायै ।

यामामनन्ति मुनयः प्रकृतिं पुराणीं
विद्येति यांश्रुतिरहस्यविदो वदन्ति ।
तामर्धपल्लवितशंकर-रूप - मुद्रां
देवीमनन्य शरणः शरणं प्रपद्ये ॥१॥

یس منیشر آدِ پرکرتی ماناں — یس ونان ودیا وید رهسہ زانہ ونی
تس شیونا تھ سنز اردانگی یوسہ — شو بھائی سُس جگتس چھ رچھونی
تس آمُت بہ ایکاگر چت بنت — چھوس پیوان تس پادن پٹھ پرن

अम्ब! स्तवेषु तव तावदुकर्तृकाणि-
कुण्ठी भवन्ति वचसामुपि गुम्फनानि ।
डिम्भस्य मे स्तुतिरसावसमञ्जसापि-
वात्सल्य निघ्न हृदया भवतीं धिनोति ॥२॥

ہی ماتا چانی تو تا کرنس پٹھ — برہما واتی تی جڈھ بنانی
مہ شُر سنزئی تو تا بدھی ٹوٹ پھوٹئی — بادنائے کن ہر دیس ژہ سُکھ دیوانی

व्योमेति बिन्दुरिति नाद इतीन्दुलेखा
रूपेति वाग्भवतनूरिति मातृकेति ।

निष्यन्दमान सुख बोध सुधा स्वरूपा
विद्योतसे मनसि भाग्यवतां जनानाम् ॥३॥

چمدا کاشہ روپ کرن نادبند روپہ کن چندرمہ کلاہش چھک ژہ پہ زلان
وانی ہُندشبد روپ چون چھو آسون سُکھ تہ گیان امرت ژہ نشہ نیران
چمکان چھک تس منز منس ژہ پلنئے جگتس منز آسہ یوس بہا گوان

आविर्भवत्पुलक संततिभिः शरीरै-
निष्यन्दमान सलिलै र्नयनैश्च नित्यम् ।
वाग्भिश्च गद्गद-पदाभि रुपासते ये
पादौ तवाम्ब! भुवनेषु त एव धन्याः ॥४॥

آسن یس روم اوتھ دینہ شریرس اوشہ آسس نترو نیران
وانی کن پد پری گت گچھ گچھ پادن ژہ آسہ یُس پوجا کران
تس ہیو کوس سناچھو تریلوکی منز ترن بونن منز سوی چھو بہا گوان

वक्त्र यदुद्गतमभिष्टुतये भवत्या-
स्तुभ्यं नमो यदपि देवि! शिरः करोति ।
चेतश्च यत्त्वयि परायणमम्ब! तानि
कस्यापि कैरपि भवन्ति तपो विशेषैः ॥५॥

مکھ یس آسی اودیو گرسس ہی ماج چانی توتا کرنس پٹھ
شیر پسند وی آسہ گری گری ہی موج ژی کن نمسکار کرنس پٹھ
من یس لگمت آسہ موج ژی کن سمرن کری چون راترو دن
آسی کاہہ سو بہا گوان کتانیہ خاص تپ کے پونیہ کن روزی گری گری چھی شرن

मूलालबाल कुहराद्दुहिता भवानि!
निर्भिद्य षट् सरसिजानि तडिल्लतेव ।
भूयोऽपि तत्र विशसि ध्रुव मण्डलेन्दु –
निःष्यन्दमान परमामृत तोय रूपा ॥ ६॥

مولادارنشہ دراج تہرشہ پمپوش چٹھ بجلی ہندی پاٹھی ھیرکن کھسان
سہسرڈلسی منز اژت نورہ نیران امرت وانی روپہ بن چھی واتان

दग्धं यदा मदनमेकमनेकधा ते
मुग्धः कटाक्ष विधिरङ्गरयां चकार ।
धत्ते तदा प्रभृति देवि! ललाट नेत्र
सत्यं ह्रियेव मुकुली कृत मिन्दुमौलिः ॥७॥

یلہ زول کامدیو اکھ شیو ناتھن اکر گٹاکھی تتھ کیت اوپدا وتھ
تنہ پٹھ مہادیو منز للاٹک نتر شرم کن اوڈوی نتر چھومژ راوتھ

अज्ञात संभव मनाकलितान्ववायं
भिक्षुं कपालिन मुवास समद्वितीयम् ।
पूर्वं करग्रहण मङ्गलतो भवत्याः
शम्भुं कएव बुबुधे गिरिराजकन्ये! ॥ ८॥

نہ جانمتی جنم سس کولہ سس بھکیو ننگے تہ دویمی روس ژھنت کلہ مال
چانی دواہ بروٹھ ہی ہمالہ پتری کس اوس ژانان شیو سندحال

चर्माम्बरं च शवभस्म विलेपनं च
भिक्षाटनं च नटनं च परेत भूमौ ।
वैताल संहति-परिग्रहता च शम्भोः
शोभां बिभर्ति गिरिजे! तव साहचर्यात् ॥ ९ ॥

چرم پوشاک شمشان بھسما ملت نژان شمشان سوبھیک منگہ ون
بھوتہ کھل پروار آسون تس شیوس شوبان تلہ یلہ ژہ سیت چھو پکون

कल्पोप संहरण केलिषु पण्डितानि
चण्डानि खण्ड परशोरपि ताण्डवानि ।
आलोकनेन तव कोमलितानि मातः!
लास्यात्मना परिणमन्ति जगद्विभूत्यै ॥ १० ॥

کلپانتک ناش نچونا تہ گندونا تس مہادیو سنز چھی بڈ کریڑا
ساروی سوبدلان سمپدین منز یلہ تراوان تھ ژہ شوبھ نظرا

जन्तोरुपश्चिमतनोः सति कर्मसाम्ये
निःशेष पाश पटल च्छिदुरा निमेषात् ।
कल्याणि! दैशिक कटाक्ष समाश्रयेण
कारुण्यतो भवसि शाम्भव वेद दीक्षा ॥ ११ ॥

جیوس کرمن سپد تھ شدھی اکہ نیمیشہ پھانسی سموتیس ژہ گالان
ژی چھک دیای کن گوڑہ روپ بنتھ شوشکھتی دیکھیا اُپدیش ژی کران

मुक्ता विभूषणवती नव विद्रुमाभा -

यच्चेतसि स्फुरसि तारकितेव सन्ध्या ।
एकः स एव भुवन त्रय सुन्दरीणा
कन्दर्पतां व्रजति पञ्चशरीं विनापि ॥ १२॥

مختہ مالہ زیور رودرہ مالہ چھن چھن
یس پورش آسہ سندھیا تارکوسس
تس پورشس تری بھونچہ یوگنئی

آسونیہ چھک ژہ موج شوبھا یمان
چون سروپ یتھ ھیونت باسان
پانچہ کان روس تی کامدیو سمران

ये भावयन्त्यमृतवाहिमि रंशुजालै -
राप्यायमान भुवनामृतेश्वरी त्वाम् ।
ते लङ्घयन्ति ननु मातरलङ्घनीया
ब्रह्मादिभिः सुर वरैरपि कालकक्षाम् ॥ १३॥

ہی ماتا یم ژہ سروی آسن
تم تران کالہ مریا دبائے

امرتہ روپہ سکھ دیوان ترن بھونین
یتھ ترن کھن برہما دکن تہ دیون

यः स्फाटिकाक्ष गुण पुस्तक कुण्डिकाढ्या
व्याख्या समुद्यत करा शरदिन्दु शुभ्राम् ।
पद्मासना च हृदये भवती-मुपास्ते
मातः! स विश्व कवितार्किक चक्रवर्ती ॥ १४

سٹکچ جپ مال اکہ اتھ دارتھ ژہ
ویاکھیانس پٹھ بیاکھ اتھ چھ لگرت
یس یتھ دھیان کری چون موج منز منس

پوستک کمنڈل بیہ دون اتھن
چندرمس ھیو پوش زن چھ آسن
کوین ھند چکرورت بنان سو جگتس

बर्हीन्दुलंसयुत बर्बर केशपाशा
गुञ्जावली कृत घनस्तन हार शोभाम् ।
श्यामा प्रवाल वदना सु कुमार हस्तां
त्वामेव नौमि शवरीं शवरस्य जायाम् ॥ १५॥

مورپچھ مکٹ سُس ژہ چیکونی کیشہ سُس ژہ ولی ہار سُس ژہ شوبھایمان
چیکونی مکھ سُس تہ کومل تھوس ژہ تہ شکاربائی روپس بہ پرنام کران

स्पर्धेन किं नवलता ललितेन मुग्धे !
क्रीतं बिभोः परुषधैमिदं त्वयेति ।
ग्राम्यो जनस्य परिहास वचांसि मन्ये
मन्द स्मितेन तव देवि जडी भवन्ति ॥१६॥

ہی مہاسندری چھک ژی آسونیہ منوہرتہ سندر نو تہر جن
کیا زی ہیتھن مولہ پتھ ہیو سوامی یس سخت بیہ کٹھور شیو چھو آسون
ویسن ہند اتھ ہاسی پوروک وچن چانی کم اسہ یسیت مودھ چھی تم بنن

ब्रह्माण्ड बुद्बुद कदम्बक संकुलोयं
मायोदधे - विविध दुःख तरङ्ग मालः ।
आश्चर्य मुम्ब झटिति प्रलयं प्रयाति
त्वद् ध्यान संतति महा वड़वा मुखाग्नौ ॥१७॥

برہمانڈ بُبر کھل بھرت ئی مایا سدر دُکھ لہر وسیت برتھ آسون
آشچرچھو ہی موج ناشس چھو واتان چون دھیان اتھ کہوت چھو واڑوا اگن

लाक्षायणीति कुटिलेति सुहारणीति -

कात्यायनीति कमलेति कलावतीति ।
एका सती भगवती परमाथ्र्यतो ऽपि
संदृश्यसे बहुविधा ननु लोकवेव ॥ १८ ॥

ادکھ پتری ٹرئی مولا دار داسنی
ساتیاینی ٹرئی کمی ٹرئی بیہ
چھک کونئی آسنت ہی موج بھوانی

پرتھ گفای منز چھک ٹرہ روزانی
چھک کاوتی تر ٹری بھگوتی
لبنہ چھک ایوان بہہ روپہ پچانی

आनन्द लक्षणमनाहत नाम्नि देवी
नादात्मना परिणतं नवरूपमीशे ।
प्रत्यङ्मुखेन मनसा परिचीयमानं
शंसन्ति नैव सलिले: पुरुकैश्च धन्या: ॥ १९ ॥

آنند روپی پرتھ چکر سس منز
ابھیاسہ کن انتر مکھ منہ کن

نادروپہ بنی لیں پرنئی دھیان
اشٹ سس کری دھیان دیہ بھاگوان

त्वं चन्द्रिका यामिनि तिग्मरुचौ रुचिर्मे
त्वं चेतनासि पुरुषे पवने बलं त्वम् ।
त्वं स्वादुतासि सलिले शिखिनि त्वमूष्मा
नि:सारमेव निखिलं त्वदृते यदि स्यात् ॥ 20 ॥

ٹرئی چھک جوتی چندس روشنی
ٹرئی چھک چیتن پورش آتمانی
ٹرئی رس جگت لشہ سار چھو روزان

ٹرئی پربس دنتی آسان
ٹرئی پران منز بل ہ سان
ٹرئی سواد پانس اگنس شکتی

ज्योतींषि यद्दिवि चरन्ति यदन्तरिक्षं

सूते पयांसि शकृदेव धेरणीं च चत्ते ।
यद्वाति वायु रनलो यदुदर्चिरुस्ते
तत्सर्व मुम्ब! तव केवल ऽऽ माज्ञयैव ॥२१॥

ہی مانا سریہ چندرما تارک
شیشہ ناگ لیس گھل پرتھوی داران
وایو فیران اگن چھو زوتان

آکاشس پٹھیم پرکاش دیوان
میگ یم رُودر جگتس تراوان
تم ساری چانی حکمہ سیت چلان

सङ्कोच मिच्छसि यदा गिरिजे तदानीं
वाक् तर्कयो रूपमुसे भूमि रनाम रूपा ।
यद्वा विकास मुपयाति यदा तदानीं
त्वन्नाम रूप गणनाः सुकरी भवन्ति ॥२२॥

سنکوچہ یژھا یلہ چھئے ژہ سیدان
تلہ ژہ موج من تہ بدھ نروکار بنان
یلہ وکاسس ایوان چھک ژہ ہی گرجی
تلہ چانی نام روپ نن چھ نیران

भोगाय देवि भवतीं कृतिनः प्रणम्य
भूकिंकरी कृत सरोज गृहाः सहस्राः ।
चिन्तामणि-प्रचय कल्पित-केलि शैले
कल्पद्रुमी पवन एव चिरं रमन्ते ॥२३॥

ہی دیوی سُکھ بایت بھاگوان
تلہ چانی بمبہ حرکچ تمن لگی تہ
چنتامنی رتناک سموہ بناوتس
منز تم یچکال چھئی فیرانی

یلہ ژئی چھئی تم پرنام کرالہ
ساسہ بزہ ایشوری چھی روزان
کھیلی ہندس پہاڑس پٹھ تم کھیلان

ہन्तु त्वमेव भवसि त्वदधीन मीशे
संसार ताप नाविल दयया पशूनाम्

वैकर्तनी किरण संहतिरेव शक्ता
धर्मं निजं शमयितुं निजयैव भूम्या ॥२४॥

ہی ماج جیوس سمسار دُوکھ ساری
چھپس ژئی ناش کران دیاے کن
دوکھن ہندناش ژہ ماتون چھو آسون
دوکھ نورتی چھئی ژئی آدین
یتھ پاٹھ سریہ چھوی پنی گرمی
شمراوان پنی درشہ کن

शक्तिः शरीरमधिदैवत मन्त्रराजा
ज्ञानं क्रिया करणमानस जालमिच्छा ।
ऐश्वर्यमायतनमाकरणानि च स्वं
किं तन्न यद्भवसि देवि ! शशाङ्कमौलेः ॥२५॥

شریر چہ آسونی شکتی ژہ آسونی
وراٹ سروپ چھک آسونی ژئی
جیو آتما دھیان شکتی کریا شکتی
اندریہ شکتی آسہ شکتی ژئی
یژھا شکتی ایشوری پریوار ژئی
گرھدین ہنز جاے آسونی ژئی
کیا نہ چھک ژہ آسونیہ یس سروپ شوسہ
سوی سروپ چھک پری پورن ژئی

भूमौ निहाक्ति हृदिता पयसि प्रतिष्ठा
विद्यानले महसि शान्तरतीत शान्तिः
व्योम्नीति याः किलकलाः कलयन्ति विश्वं
तासां विदूरतर मम्ब ! पदं त्वदीयम् ॥२६॥

پرتھوی منز نورتی کلا روپ ژئی
جلس منز پرتھٹا کلا روپ ژئی
اگنس منز ودیا کلا ژہ آسونیہ
پونس منز شانتی کلا ژئی
آکاشس یمہ کلاے جگتس داران
تمو نشہ دور چون سروپ آسون
تمو کلا یو نشہ دور چون سروپ
تمہ نشہ موج دور روزان ژئی

यावत्पदं पदसरोजयुगं त्वदीयं
नाड़ीं करोति हृदयेषु जगच्छरण्ये ।।
तावत् विकल्प जटिलाः कुटिल प्रकाश-
स्तर्कग्रहाः समयिनां प्रलयं न यान्ति ॥२७॥

یُت تام نہ پاد جُوری چانی رٹن ہردیس
یم بحث کرونی اُلٹ وادی
ہی جگت رچھونی تُت تانیہ تم شک برتھئی
موڑھ بہاؤ تہند ناش کتی سپدی

यद् देवयान पितृयान विहार मेके
कृत्वा मनः करण मंडल सार्वभौमम् ।
याने निवेश्य तव कारण पञ्चकस्य
पर्वाणि पार्वति! नयन्ति निजासनत्वम् ॥२८॥

یم یوگی پُرش پرانا پانہ یوگ ابھیاس کرکر یلہ پراون
اندر یہ کھل تہ من آسک نیمُت تم سواری کران پانژن کارن

स्थलासु मूर्तिषु महीप्रमुखासु मूर्तेः
करुणश्चनापि तव वैभव मम्ब! यस्याः ।
परया गिरामपि न शक्यत एव वक्तु
तासि स्तुता किल मयेति निनिश्चितव्यम् ॥२९॥

پرتھوی تتہ پیٹھ بابا تس تام یہ تھولہ مورتئی موج چھی آسان
کوئی مورتی تنز ہی موج یوانی چانی ہش وبھوتی چھنہ باسان
برہما دکن تی چھونہ تھہ ہیو سامرتھ گُن چانی گیوتھ چھنہ تم تی کیہہ ہرکان
تمئے وبھوتی ہُند گُن کرمہ گاین معافی دیم مہ چھوس بہ آشا وان

कालाग्नि कोटि रुचिमम्ब षडुद्धवशुद्धा -
वाधार वर्त्मसु भवतीं मनुतोऽध वृष्टिम् ।
श्यामा घनस्तन तटी सकलीकृतीं च
ध्यायन्त एव जगतां गुरवो भवन्ति ॥३०॥

کلپانتہ اگنہ پاٹھ گہہ سُس ہی موج سمسار ناشس پٹھ ژہ چمکان
سارو ئی بیہ قایم کرنس پٹھ چھک ژہ تلہ امرتک ورشن کران
ریم شامہ روپ سُندر چوان دھیان چھی داران تم موج جگتنک گورو چھی سپدان

विद्यां परां कतिचिदम्ब मनु! केचि -
द्ध्यायन्त मेव कतिचित्कति चिच्च मायाम् ।
त्वां विश्व मातु रुपरे वय मामनाम
ज्ञाचार पार करुणा गुरु मूर्ति मेव ॥३१॥

کینہہ چھئی تہنز ودیا کینہہ چھئی آنند کینہہ چھئی مایا روپ ژہ مانان
کینہہ جگت ماتا ساکھیات حدہ روس دیا سروپ گورو روپہ اسی ژہ زانان

कुवलय दल नील बबेर-स्निग्ध केशं
पृथुतर कुच भार-क्रान्त कान्ता वलग्नम् ।
किमिह बहुभि रुक्तै-स्त्वत्स्वरूपं पर नः
सकल भुवन मातः सन्तनं सन्निधत्ताम् ॥३२॥

کُولیہ یرگیا پاٹھ چھک مارج ژہ چمکونی دارمُت ژہ ہی موج سُندر کیش
سُندر کمر سُس سینہ بُون تراوتھ ہی موج آسونی ژہ جگتیچ ایش
زیادہ دنتھی کیا نیری حاصل جگتیچ جی سنمکھ مہ روز تم نت دتم تیوتھ سندیش

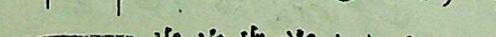

सकलजननी स्तवः। षञ्चमः।

अजानन्तो यान्ति क्षयमवश्यमन्योन्य कलहै-
रमी मायाग्रन्थौ तव परिजुषन्तः समधिनः।
जगन्मात जन्म ज्वर भय तमः कौमुदि! वयं
नमस्ते कुर्वाणाः शरण सुधा मो भगवतीम् ॥१॥

نزانہ دن مورکھ پانہ وینہ لڑ لڑ
اوش پاٹھ ناشہ بہادس چھئی وانان
یمئے متہ وادی مایائی ہند نئی
گنڈ نئی پھ ستھ ڈولہ ڈولہ گڑھان
ہی جگت ماتا اسی جنمکہ جرُ
بھئے کہ تمہ کوئی چھندرمہ ژہ باسان
آمرت شرن چھی سُنمکھ ہی موج
گل گنڈتھ اس ژہ کُن پنام چھی کران

वचस्तत्कीगम्य स्वरस परमानन्द विभव-
प्रबोधाकाराय द्युति लुलित नीलोत्पल रुचे।
शिवस्याराध्याय स्तनभर विनम्राय सतत
नमो यस्मै कस्मै चन भवतु गुम्फाय महसे ॥२॥

وانی کِن وچارکِن چھک ژہ موج نہ پراونی
چھک ژہ چیتن سروپ پرمہ آنند
یمی اوتھ یلہ پوشہ دنتی آس
ژی شوبھایمان بیہ گیان تہ آنند
شوس چھک آرادینی جگتس پڑھاوان
گیانہ کریا روپہ تنہ یاری رکن
نمسکار آسئے تھ کھانہ تیزس
ساری موہس اندر انان ژہ یمی رکن

लुठद् गुञ्जाहार स्तनभर नमन्मध्य-लतिका
मुदञ्चद्रोमाभ: कण गुणित नीलोत्पल रुचम्।
शिव पार्श्व ज्ञाग प्रण-मृगया कार- गुणित
शिवा मुन्वग् यान्तीं शवर मुह मुन्वेमि शवरीम् ॥३॥

رچھ فل ہارژہ نالی تنہ یاری نمتھئی
زاول کمریس ژہ موج شوبھان
پھٹتہ گومسیت گمہ فرژہ شوبونی
پتلی اوتھ یلہ پوشہ رنگہ چمکان
ارجنس رچھنے تس شیوس پتہ پتہ
دارمت تنکاری روپ اس ژہ آسون
تھ تنکاری بھائی روپس ہی موج بوانی
گل گنڈتھ ژی آمرت چھوسے شرن

मिथः केशाकेशि प्रधन निधन स्वर्क घटना
बहु श्रद्धा भक्ति प्रणय विषया श्चाप्त-विधय:।
प्रसीद प्रत्यक्षी भव गिरिसुते! देहि शरण
निरालम्ब चेत: परिलुठति पारिप्लव मिदम् ॥४॥

بحث کردن چھی مس کڈان اکھ اکس لڑ لڑ تمن پتہ ناش چھو سپدان
ستھاہ پرش بھکتی کن تہ پریہ کن شردھائی کن چاتی پوڑا کران
ہی راج پرکٹ ین اسہ پٹھ پرسن بن سنتوشٹھ بن اسہ روز بچاوان
اسہ بھی چنچل منہ بس تھہ روستی تھیب کراسہ سوج نہ چھی ڈولہ گڑھان

शुनां वा वद्धे वा सुभग परिषदो वा यदधानं
कदा केन क्वेति क्वचिदपि न काश्चित्कलयति ।
प्रमुष्मिन्विश्वासं विजहि हि मयाह्याय वपुषि
प्रयच्छेथा श्चेत: सकलजननी मेव शरणम् ॥ ५॥

ہی منہ پٹھ شریر پس پٹھ نہ اعتبار چھوی خوراک ی انگنگ یا پانکھی کھیوان
کہ وقتہ کتھ جایہ کتھ پاٹھ کہ طریقہ پئی پتھر شریر کر کانہہ نہ زانان
میانی من گڑھ شرن جگتچہ ماجہ کن شریر رچ تمنا جلد ژہ تراوُن

शुनाद्यन्ता भेद प्रणय रसिकापि प्रणयिनी
शिवस्यासी यैत्त्व मरिणय विधौ देवि गृहिणी ।
सवित्री भूतानां मपि यदुदभू: शैल तनया
तदेत त्संसार प्रणयन महा नाटक सुखम् ॥ ६॥

آدانت روس بیہ بھید روس پریہ روپ آستھ تی چھک شیو سنز پریہ روپ
وداہ ودھی کن ہی دیوی چھک تس مہادیو سنز گراھنی روپ
ہی ہمالہ پتری جون کران ژہ پیدہ سمار لیلا چھی چون جشنہ روپ

ब्रुवन्त्येके तत्त्वं भगवति सदन्ये विदुरसत्
परे मात: । प्राहु स्तव सदसदन्ये तु कवय: ।
परे नैतत्सर्वं समभि दधते देवि सुधिय-
स्तदेत त्त्वन्माया-विलसित मशेषं ननु शिवे! ॥ ७॥

ہی دیوی کنہہ چھی ونان ژہ تتو روپ کنہہ چھی ونان ست کنہہ است روپ
کنہہ چھی ونان تہند کھوتہ تہ ہی سوج کنہہ دانا ونان ست است روپ
کنہہ چھی ونان انز واچہ ژہ اسون کنہہ ونان یہ ساروی چھو چون پھولنہ روپ

ताडित्कोटि ज्योतिर्द्योति दलित षड् ग्रन्थि गहनं
प्रविष्टं स्वाधारं पुनरपि सुधा वृष्टि वपुषा ।
किमप्याष्टात्रिंशत्किरण सकली भूत-मनिशं
भजे धाम श्यामं कुच भरनत बर्बर कचम् ॥ ८॥

کروہ اوذ ملہ سمان چانی ونتی
سوآ وار چکرس بیہ قورہ نیران
38 کلا روپ جگت وکساوتھ
تتھ شامہ روپس ہی موج یوانی

کتھنن شن گنڈن ژ ٹھ چھک اژان
امرت ورشن سروپہ کن وسان
تنہ باری نمتھی کیش ژہ چمکان
گری گری روزہ ہا بوسیوا کران

चतुष्पत्रान्तः षड्दल भग युतान्त स्त्रिवलय-
स्फुरद् विद्युद्वह्नि द्युमणि नियता भद्युतियुते ।
षडश्रं भित्त्वादौ दशदल मथ द्वादश दलं
कलाश्रं च द्यश्रं गतवति नमस्ते गिरिसुते ! ॥९॥

چوتش دلہ کملہ منز نیر تھ شٹھ دلس
اوذ ملہ چمک زن ساسہ بدسر یہ زن
شٹھ دلہ ژ ٹھ دشہ دلہ پتہ دوادشہ دل
دو دلہ منزہ درا مچہ تس کنڈ لنئی

ترکونس منز ساڑھ تری وار سر پاکار
شکھتی کنڈلنی نتی ژہ چمکان
پتہ شوڈشہ دلہ پٹھ چھی نیران
ہی گرجی چھس تتھ سروپس نمسکار کران

कुलं केचित्प्राहु-र्वपुर कुल मन्ये तव बुधाः
परे तत्संभेदं समभिदधते कौल मुपरे ।
चतुर्णा मप्येषा मुपरि किमपि प्राहु रपरे
महामाये ! तत्वं तव कथ मुमी निश्चिनुमहे ॥१०॥

کنہہ گیانی ونان چہ ۳۶ تتو روپ
کنہہ ونان چھئی ژہ موج شیو شکھتی روپ
کنہہ ونان ٹھدہ کہونہ ٹھد کوستانیہ سروپ

کنہہ گیانی ونان ژہ پرمہ شیو روپ
کنہہ ونان امہ کہونہ ٹھد چھو چون روپ
ہی مہا مائی کتھ پاٹھ نشچے

بنہ اسہ کوستا چھو چون موج سروپ

षडध्वारण्यानीं प्रलय रविकोटि प्रतिरुचा
रुचा भस्मी कृत्य स्वपद कमल प्रह्व शिरसाम् ।
वितन्वानः शैवं किमपि वपु रिन्दीवर रुचिः
कुचाभ्यामानम्रः शिव पुरुषकारो विजयते ॥११॥

شہ وتی سس جنگل پرلئے کالس پٹھ
پنن بھکتن یم چانن چرنن
شیو سنز کوستانیہ سروپ ژہ دنتی سس

کرور دنتی سس ژہ پرزلان
پٹھ تھوان مستک چھک تمن رچھان
گیان کریا تنہ باری نمتھ ژہ شوبھان

شیو سُند پورشہ کا ڈچھک موج ژہ آسونیہ تتھ شکتی روپس ژی نمسکار کران

प्रियङ्गु श्यामाङ्गी कुरुत तरवासः किसलया
समुन्मीलन्मुक्ता फल बहुल नेपथ्य सुभगाम् ।
स्तन द्वन्द्व स्फार स्तबक नमिता कल्पलतिका
सकृद् ध्यायन्तस्त्वां दधति शिव चिन्तामणि पदम् ॥१२॥

ینگہ پوشہ یاٹھ شامہ سُندر شریر سس سرخ وستر چھک ژہ دارانی
پھولمتہ مختہ بیہ پوشہ لباسہ سس تنہ بار نمتھئی ژہ شوبھانی
ہی دیوی چھک ژہ کلپہ تہر آسونیہ یُس اکر لٹر چون دھیان دارانی
سوی شیو روپی چنتامن رتن چانی دیائے کن چھو پراوانی

प्रकाशानन्दाभ्या मविदित चरीं मध्य पदवीं
प्रविश्येतद् द्वन्द्वं रवि शशि समाख्यं कवलयन् ।
प्रविश्योर्ध्वं नादं लय दहन भस्मीकृत कुलः
प्रसादात्ते जन्तुः शिव मकुल मम्ब प्रविशति ॥१३॥

گیان کن کریای کن فیرتھ سوسمنا اندر اژت دوشیونی گراس کران
اُردہ ناوس اژت چت ویمرشہ اگن کن سارنی چکرن بھسم چھ کران
تمہ پتہ چانی انوگرہ کن سادھک اونا شہ شیو پدس پٹھ چھو واتان

षड़ाधारावर्ते रपरि मित मन्त्रोर्मि पटलै-
श्चलन्मुद्रा फेनै र्बहुविध लसद् दैवत झषैः ।
क्रम स्रोतोभि स्त्वं वहसि परनादा मृत नदीं
भवानि ! प्रत्यग्रा शिव चिदमृताब्धि प्रणयिनी ॥१४॥

6 چکر آولنہ نشہ منتر ملکونشہ مُدرائے کفر نشہ یلہ ژہ نیران
کرم روپہ گاڈونشہ کرمکہ دریاونشہ پرہ ناو امرتہ روپہ یلہ چھک دسان
ہی امرج واتان چھک نوس دریاوس شیو روپہ چت سُدرس منتر ژہ روزان

महीपाथो वह्नि श्वसन वियदात्मेन्दु रविभि
र्वपुभि र्ग्रस्तांशे रपि तव कियान्म्ब ! महिमा ।
अमून्या लोक्यन्ते भगवति न कुत्राप्यणुतरा-

भुवस्थां प्राज्ञानि त्वयि तु परमव्योम वपुषि ॥१५॥

پرتھوی جل اگن وایو تہ آکاش
سریہ چندرمہ بیہ جیو آتما
امشو کن بنا ومت چھی ژہ پانئے
کوتاہ چھو موج بوانی چون تہما
چانس پرمہ آکاشکس سروپس
منز چھنہ یم تی کوئی وجودس ایوان

मनुष्या स्तिर्यञ्चो महत इति लोकत्रयमिदं
भवाम्भोधौ मग्नं त्रिगुण लहरी कोटि लुठितम्।
कटाक्षस्ते दद्यात् क्वचन तव मातः करुणया
शरीरी सद्योऽयं व्रजति परमानन्द-तनुताम् ॥१६॥

منش چاروائی تہ دیو تریلوکی
سمسار سندرس منز چھی پھٹمت
کروڑ یمہ ست رج تمہ لہرن منز
۳ گن ملکن منز ڈوکہ چھی گیمت
یدوے یمن منز بہ کینسی چون کٹاکھ
ہی ماتا سوزیوادہ چھو واتان
پرمہ آنندکس سروپس سو جلدی
پرمہ پد دیائے چانی کن چھو پراوان

कला प्रज्ञा मार्द्दवं समय मनुभूति समरसा
गुरु पारम्पर्यं विनय मुपदेशश्च शिव कथाम्।
प्रमाणं निर्वाणं परम मतिभूत परगुहा
विधिं विद्या माहुः सकल-जननीमेव मुनयः ॥१७॥

ہی جگت ماتا منیشور چھی تژی ونان
کریا بدھ آد انوبو سمتا
گورہ یم پراونی اپدیش شو کتھا
پرمان نرمان پرتیکھ تہ انمان
رھسہ گیان مریاد اتہ زبیہ ودیا شکھتی
جگت ماتا چانی سروپ چھی یم ونان

प्रलीने शब्दौघे तदनुविरते बिन्दु विभवे
ततस्तत्त्वे चाभूध्वनिभि रनुपाधिन्युपरते।
श्रिते शाक्ते पर्व्वण्यनु कलित चिन्मात्रगहना
स्वसंवित्तिं योगी रसयति शिवाख्यां परतनुम् ॥१८॥

شید سہوہ زوکا وتھ پتہ بندہ وبھوگالنتھ
یشٹھ گیان چت آکاشس منز لین کرتھ
تتوس پنتھ آتمہ سروپس اوپادھی رہتس
نادہ روپ یہ امرتس منز زوکا وتھ
شاکھتی مارگ آشریہ چھی یم رٹان
چیتن ماترک ہسہ تم ومرشس کران
سابھاوک شو سروپس تم پراوان
تھدس شو سروپس تم سواد کران

परानन्दाकारां निरवधि शिवैश्वर्य वपुषं

निराकारं ज्ञानं प्रकृति मुनवच्छिन्न करुणाम् ।
सवित्रीं लोकानां निरतिशय धामास्पद पदां
भवो वा मोक्षो वा भवतु भवतीमेव भजताम् ॥१६॥

حدہ روس پرمآنند روپہ چون دھیان
شیو ایشوری روپہ یس مانان
نروکار گیان روسہ حدہ روس دیا روپہ
جیو پیدہ کروں یس ژہ مانان
تس برابری چھئے موکھیا سمسار
یس کوئی روپہ جانی سیو اکران

जगत्काये कृत्वा तमपि हृदये तच्च सुरुचे
मुमार्स बिन्दुस्थं तमपि परनादाख्य गहने ।
तदेतज्ज्ञानाख्ये तदपि परमानन्द विभवे
महा व्योमाकारे त्वदनुभवशीलो विजयते ॥२०॥

جگت کایاے منز چھک ہر دیہ ژہ آسونہ
ہر دیس منز چھک آتما دیو روپ
آتما پرکاش منز بندو ٹھیکت
بندس منز چھک پرہ ناو روپ
ناو دس منز گیان روپ چون آسون
گیانس منز پرمانند وبھو روپ
ہی جگت مانا جئے کار تمنئی
یم کرن چون لو لہا کاشہ روپ

विद्ये विद्ये वेद्ये विविध समये वेद जननि
विचित्रे विश्वाद्ये विनयसुलभे वेद गुलिके ।
शिवाज्ञे शीलस्थे शिव पदवदन्ये शिवनिधे
शिवे मातर्मह्यं त्वयि वितर भक्तिं निरुपमाम् ॥२१॥

سدا نشٹہ آچار روپ ہی وید ماتا
ہی کریا شکھتی گیان شکھتی وودھ
وید سن ژہ پراوتی ژہ وید سار
ہی وچتر روپی چھک ژہ جگت آد
شیو پد دیوان ژی ہی ماتا
شیو اگنیاے منز ژی سبھاو روپی
بے حد بھگتی دیتے ہی ماتا
شکھ کوی خزانہ چھک آسونہ ژہ ہی نج

विधे मुण्डं हृत्वा यदकुरुत पात्रं करतले
हरिं शूलप्रोतं यदगमयदंसाऽभरणताम् ।
अलंचक्रे कण्ठं यदपि गरलेनाम्ब! गिरिशः
शिवस्थायाः शक्तेस्तदिदमखिलं ते विलसितम् ॥२२॥

برہما سُند کلہ الگ کرتھ تتھ کلس — پنے اتھک پاتر بنا وتھ
پنے فیکی کوئی بناؤن زیور — نارائن ترشولس پٹھ اوکرتھ
سخت کہوتہ سختی زہر کن تمکھ شیون — ہوٹہ لیس پنوی شو بھراون
شوس پٹھ ٹھیکیچہ امی شکھتی ہنڈ — ٹی سوروی چونئی ولاس چھو آسوں

विरिञ्च्याख्या मातः! सृजसि हरिसङ्घा त्वमवसि
त्रिलोकी रुद्राख्या हरसि विदधासीश्वर दृशम्।
भवन्ती सादाख्या शिवयसि च पाशौघ दलिनी
त्वमेवैका, नैका भवसि कृत भेदै गिरिसुते ॥२३॥

برہما ناوہ کن کران پیدہ تریلوکی — نارایہ ناوہ کن چھک ژہ تتھ رچھان
رودرہ ناوہ کن ژی چھک کران سمہار — ایشر دشا چھک ژی داوان
سداشیو ناوہ کن جگتس دیوان شکھ — پاشن ہند سموہ ژی گالان
ہی ہمالہ پتری جئی کونی آستھ — یوں یوں کا میو کن ایک ژہ باسان

मुनीनां चेतोभिः प्रमुदित कषायै रपि मनाक्
अशक्ये संस्पृष्टुं चकित चकितै रम्ब सततम्।
श्रुतीनां मूर्धानः प्रकृति कठिना: कोमल तरैः
कथं ते विन्दन्ति पद किसलये पार्वति! पदम् ॥२४॥

ہی مانا یم منیشور چھی منہ کیو — گمیتو دوشو سرس آسوں
تم تی خوچ خوچ موج چانن پادن — سپرش کرنس پٹھ چھئی نہ ہیکون
اوپہ نشدھ سُبھاؤ کن کٹھن پاٹھی تم — چانن چرن کملن ہنزہ جائے پراون

तडिद्वल्लीं नित्या मभृत सरितं पार रहितां
मलां तीर्णां ज्योत्स्नां प्रकृति मगुण ग्रन्थि गहनाम्।
गिरां दूरां विद्या मविनत कुचां विश्व जननी-
मुपर्यन्तः क्लृप्तौ समिदधति सन्तो भगवतीम् ॥२५॥

اوزملہ روپ اپار امرت ندی روپ — نرملہ چندرمہ ترگن روپ
وانی نشہ دور ژی تہنز ودیا سروپ — گیان کریا تنو نمتھ جگت ماتا روپ
چھئی ونان ست زن ہی دیوی چانی — یم روپ تہ بیہ انتہ لچھمی روپ

शरीरं शिल्यम्बः प्रभृति रचितं केवल मिदं -

सुखं दुखं चायं कलयति पुमां श्वेतन इति ।
स्फुटं जानानोऽपि प्रभवति न देही रहयितुं
शरीरादहंकारं तव समय बाह्यो गिरिसुते ! ॥२६॥

پرتھوی جل اگن وایو تہ آکاش
چھوڑی مین پانچہ لوتن شریر بنان
شکھ دکھ اچھا زنان پورشہ چیتن
نمود پاٹھ جیوا ہیوک انوبو کران
ہی ہمالہ پتری شریرک اہنکار
چھوٹہ جیو چاتی اگرہ روس تراوان

पिता माता भ्राता सुहृदनुचरः सर्व गृहिणी
वसुः पुत्रो मित्रं धनमपि यदा सा विजहति ।
तदा मे मिन्दाना सपदि भय मोहान्धतमसं
महाज्योत्स्ने ! मात भव करुणया सन्निधिकरी ॥२७॥

مول ماجی بھائی بند نوکر تہ گرہنی
شریر پتر متر گھرہ بیر دھن
یمی وقت تراونم تمی وقت بھئے موہ
اندکارس جلد جلد چھوٹی ین
مہا پرکاشہ روپ بنھ دیائے کن ماجی
نزدیک ٹھہرت شنکھ مہ ین

सुता दक्षस्यादौ किल सकल मातः स्व मुदभूः
स दोषं तं हित्वा तदनु गिरिराजस्य तनया ।
अनाद्यन्ता शम्भो रपृथगपि शक्ति र्भगवती
विवाहाज्जायासीत्यहह चरितं वेत्ति तव कः ॥२८॥

ہی جگت ماتا گوڈہ پتھ آ سکھ
دکھی پرجا پتہ متر ڑی کماری
دوشہ کن چھنتن سوئی ڑی تراوتھ
پتہ نیکھ ڑی ہمالہ پتری
آدانتہ رستس تس نیوس نشہ چھگنہ
زاہ تہ یون ہی شاکتی بھگوتی
وداہ روسہ ور دارتھن ڑہ شنکر
تم چاتی پرتر کوس زانتی

कणा स्त्वद्दीक्षानां रवि शशि कृशानु प्रभृतय:
परब्रह्म स्तुवं तव नियत मानन्द कणिका ।
शिवादि शिल्यन्तं निवलय तनो: सर्व मुदरे
तवास्ते भक्तस्य स्फुरसि हृदि चित्रं भगवति ॥२९॥

ہی دیوی سریہ چندرمہ بیہ اگن
چاتی دفتی ہنزہ چھی اکھ رتبرا
پرم برہم چھوی چاتی تہ آنند منزہ
آسون چھوی اکھ لوکٹ ہشہ لشہ

شونا تھ سندی پٹھ پر تھوی تو تس تا نیہ سارتی ژہ کنڈلنی روپیہ روزان
ہر دیس منز پر کٹ پاٹھ چمکان آ شچر چھو ملج چون بھکتن چھک چھئی

त्वया यो जानीते रचयति भवत्येव सततं
त्रयीवेच्छक्त्यम्ब त्वमसि निखिला यस्य तनवः ।
गता साम्यं शम्भु र्वहति परमं व्योम भवती
तथाप्येवं हित्वा विहरते शिवस्योति किमिदम् ॥३०॥

چانی کن زانان چانی کن یچھان سوی چانی کن سوشیو جگت چھوی بناوان
ژی چھک تس سر و پ چانی کن چھوی سوی سوامہ بہادس پٹھ واتان
یلہ تراوان ژہ موج تلہ چانس پرمہ آکاشس منز لین سیدان

पुरः पश्चादन्तर्बहि रुपरि सेयं परिमिता
परं स्थूलं सूक्ष्मं सकुलमकुलं गुह्यमगुह्यम् ।
दवीयो नेदीयः सदसदिति विश्वं भगवती
सदा पश्यन्त्याज्ञा वहसि भुवन क्षोभ जननीम् ॥३१॥

بر دٹھ پتہ اندرہ نبرہ لوک بڈ موڈہ سکھم شیو روپ شکھی روپ گفتہ نمود روپ
دور نزدیک ست است رُوپہ پیش جگت تتھ سرشٹی تھت سمہار چھئی کرونی

جگتچ آگنیا کار ژہ زانہ ایوان

मयूखाः मूष्णीव ज्वलन इव तद्दीप्ति कणिकाः
पयोधौ कल्लोल प्रतिहित महिम्नीव मूषतः ।
उदेत्योदेत्याम्ब त्वयि सह निजै स्तात्त्विक कुलै-
भजन्ते तत्वौघाः प्रशम मनु कल्प परवशाः ॥३२॥

سریہ سند کران زن انگنیچہ تمبری زن سمندرن ملکن ہنزہ پانیہ چھکہ زن
تتھے پاٹھ شو پٹھ پر تھوی تو تس تا نیہ پرتھ کلپانتس اوتھاوتھ لئے سیدان

विधु र्विष्णु र्ब्रह्मा प्रकृति रणु रात्मा दिनकरः
स्वभावो जैनेन्द्र सुगत मुनि राकाश मनिलः ।
शिवः शक्ति श्चेति श्रुति विषयता तामुपगता
विकल्पै रेभि स्त्वामभि दधति सन्तो भगवतीम् ॥३३॥

چندرمہ ویشنو برہما بیہ سریہ مایا سبھاوگت جیو تہ آتما
آکاش والیو شوشکھتی یم تاوہ بھیدکن ویدکی پٹھ یم واتان
ست جن یمو ناوکن بن بن ہی موج بوانی جئی چھی سمان

प्रविश्य स्व मार्गं सहज दयया देशिक दृशा
षडध्व ध्वान्तौघ च्छिदुर गणनातीत करुणाम् ।

परानन्दाकारा समदमिवद्यन्तौ मापि तनु
स्वमात्मानं धन्या शिरसि मुपलम्भे भगवतीम् ॥३४॥

قدرتی دیائے کن گورو سنتری نظری کن — یم شکھتی مارگس منتر پردیش کران
تمنی رشتہ وتی سُس سمار اندکار — دیائے کن موج چھک ژہ گالان
پرماند کوی سکھ دیوان ژہ تمنی — تمنے بہاگوان موج چھئی ژہ پراوان

शिवस्त्वं शक्तिस्त्वं त्वमसि समया त्वं समयिनी
त्वमात्मा त्वं दीक्षा त्वमपि गुणिमादि र्गुण गुणाः ।
अविद्या त्वं विद्या त्वमसि निखिलं त्वं किमपरं
पृथक् तत्वं तत्वो भगवति न वीक्षामह इमे ॥३५॥

ژی چھک شونے ژی چھک شکھتی — ژی سمئے تھ زانہ وینہ چھک ژی
ژی آتما چھک اپدیش چھک ژی — ژی انا دکھ اشٹ سدھی ژی
ژی اودیا ودیا جگنک پدارتھ — ژہ نشہ کاہہ تھ چھی نہ یون اسی زانان

असंख्यैः प्राचीनै र्जननि जननैः कर्म निलया-
दृते जन्मन्यन्ते गुरु वपुष मासाद्य गिरिशम् ।
अवाप्याज्ञां शैवीं क्रमतनुरपि त्वां विदितवान्
नयेयं त्वत्पूजा स्तुति विरचनैनैव दिवसान् ॥३६॥

ہی مانا اسکھ پیران جنمن ہند — کرم گلنہ کن اوتیہ جنم پراوتھ
گورو شو سروپ لبتھ تکھتی سرت پراوتھ — وارہ پاٹھ موج چون سروپ زانتھ
چانی توتا تہ پوجا کروں بہ روزے — تھ سیت ژھنہ بوون دن کٹاوتھ

यत् षट्पत्रं कमल मुदितं तस्य या कर्णिकाख्या
योनि स्तस्याः प्रथित मुदरे यत्तदोंकार पीठम् ।
तस्मिन्नन्तः कुचभर नतां कुण्डलीनः प्रवृत्तां
श्यामाकारां सकल जननीं सन्तत भावयामि ॥३७॥

سو دھشٹان چکرس منتر شٹھ دل — پیوش لیس چھوی موج آسون
تت منتر آسون لیس چھو بیجوک کوش — بیجہ کوشس پٹھ اومکار چہ جالے
اومکار چہ جانے پٹھ واس کروی — یوسہ کنڈلنی چھک تتی ژہ روزان
تس شامہ سندر مورتی دارونی — جگت ماتائے ژئی نت یہ سمران

भुवि पयसि कृशानौ मारुते खे शशाङ्के
सवितरि यजमाने प्यनुष्टधा शक्ति रेका ।
वहति कुचभराभ्यां या विनम्राप्यि विश्वं
सकल जननि सा त्वं पाहि मा मित्युपश्यम् ॥३८॥

پرتھوی جل اگن وایو آکاش — سریہ چندرمہ یجمن یمن آتھن
چھک کوئی شکھتی گیان کریا روپ — تنہ پاپی تمتھی جگت چھ داران
سوئی چھک سادی جگتیچ ژی ماتا — اوشن پاہی چھ ژہ کرسون پالن

समाप्त